नित्य लीला

(व्यापक subject matter)

नित्य लीला है यह इतना विस्तृत..., इतना व्यापक subject matter है- कि निश्चित रूप से बोलने में केवल एक ही चीज़ होती है, ऐसा होता नहीं है जबकि भगवान् के अनेक प्रकाश में नित्य लीला निरन्तर..., अनेक प्रकाश में, many-many प्रकाश में, नित्य लीला निरन्तर चलती रहती है।

जैसे रात्रि के समय राधा-कृष्ण का मिलन है यमुना पुलिन पर, एक प्रकाश में मिलन हो रहा है यमुना पुलिन पर, राधा-कृष्ण साथ हैं, सब सखी हैं, और एक और प्रकाश में मिलन नहीं हो रहा- राधारानी उसमें इंतज़ार कर रही हैं और कृष्ण आ ही नहीं रहे। दोनों ही नित्य लीला हैं।

तो नित्य लीला ऐसा नहीं है कि एक ही प्रकार से हो रहा है। क्योंकि भिन्न-भिन्न प्रकार का रस आस्वादन है..., रसिकशेखर हैं न, तो हर एक प्रकार का रस आस्वादन है। एक में राधारानी wait ही कर रही हैं, फिर कृष्ण आ ही नहीं रहें, वे सुबह आ रहे हैं चन्द्रावली के चिन्ह इत्यादि लगे हैं।

अनेक-अनेक प्रकाश में अनेक-अनेक प्रकार से नित्य लीला अनुष्ठित होती है।

यह तो सिर्फ़ मैं अभी आपको किशोर रूप की बात बता रहा हूँ। ऐसे अनेक और प्रकाश भी हैं जो किशोर रूप नहीं हैं। तो वो भी नित्य लीला है। वो भी नित्य लीला चल रहा है। समझ पा रहे हैं? किशोर रूप में भी चल रहा है, नित्य लीला अनेक प्रकाश में..., अनेक-अनेक प्रकार से, और अन्य प्रकाशों में अन्य रूप में भी नित्य लीला निरन्तर चल रहा है। एक में मिलन का आस्वादन हो रहा है, एक में विरह का आस्वादन भी हो रहा है। दोनों नित्य लीला हैं।